B.A I- Psychology Paper — IInd

Mental Disease. (मानसिक रोग)

Topic — M ③

नैतिकवाला

विघटित व्यक्तित्व का अध्ययन ही असामान्य मनोविज्ञान है। (The study of disorganised Personality is abnormal Psychology) असामान्य मनोविज्ञान मानसिक बीमारी का अध्ययन करता है। मानसिक बीमारियां अनेक हैं। सभी मानसिक बीमारियों को साधारणतः दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है। एक प्रकार के अन्तर्गत आनेवाली सभी मानसिक बीमारियों को मनःस्नायुविकृतियाँ (Psychoneurosis) कहते हैं तथा दूसरे प्रकार के अन्तर्गत आनेवाली सभी मानसिक बीमारियों को मनोविकृतियाँ (Psychosis) कहते हैं। इन दोनों प्रकार के मानसिक बीमारियों को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट कर सकते हैं।

Psychoneurosis (मनोस्नायुविकृति)

(1) चिंतामनोस्नायुविकृति (Anxiety Neurosis)
(2) Anxiety Hysteria (चिन्ता उन्माद)
(3) Obsessive-Compulsive Neurosis. (मनोग्रस्तता-बाध्यता मनःस्नायुविकृति)
(4) Neurasthenia मनःस्नायुदुर्बलता
(5) Hysteria (हिस्ट्रीया या उन्माद)
(6) Phobia (फोबिया)

Psychosis. (मनोविकृति)

(1) Paranoia. (स्थिर व्यामोह)
(2) उत्साह विषाद मनोविकृति (Manic depressive Psychosis)
(3) Schizophrenia. मनोविदलता

इन दोनो प्रकार के मानसिक बीमारियों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ समानता और अन्तर पाये जाते हैं जो निम्नलिखित है।

(1) इन दोनों प्रकार की मानसिक बीमारियों का अध्ययन करने पर पहली समानता यह पाते हैं कि ये दोनों मानसिक बीमारियां हैं और दोनों का अध्ययन मानसिक बीमारी के रूप में किया जाता है।

(5) मनःस्नायु विकृति से ग्रसित व्यक्ति को भौतिकवातावरण की उत्तेजनाओं की चेतन अनुभूति होती है। वे गर्मी, ठंढा एवं अन्य उत्तेजनाओं की चेतन अनुभूति करते हैं लेकिन मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति धूप, वर्षा, जाड़ा, भूख एवं प्यास की चेतनअनुभूति नहीं करते हैं।

(6) मनःस्नायुविकृति से ग्रसित व्यक्ति में फ्यूग (Fugue) का लक्षण पाया जाता है। यह Hysteria (हिस्ट्रीया) का का एक प्रधान लक्षण होता है। इस लक्षण में व्यक्ति अचानक अपना गतजीवन भुलाकर एक नया जीवन आरम्भ करता है। इस नये जीवन में पुराने जीवन की कोई भी बात इसे याद नहीं रहती है। लेकिन मनोविकृति के रोगी में इस तरह का कोई लक्षण नहीं पाया जाता है।

(7) मनोविकृति के रोगी में बहुव्यक्तित्व (Multiple personality) का लक्षण नहीं पाया जाता है लेकिन मनःस्नायु विकृति का एक प्रकार Hysteria (हिस्ट्रीया) है Hysteria के रोगी का यह प्रधान लक्षण है। रोगी का व्यक्तित्व एक या दो या अनेक भागों में विभक्त हो जाता है। वह कभी विनोदी स्वरूप का हो जाता है तो कभी गंभीर स्वरूप का हो जाता है।

(8) मनोविकृति को साधारणतः दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है। एक को क्रियात्मक मनोविकृति (Functional Psychosis) कहते हैं लेकिन इस तरह का कोई भी प्रकार मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाया जाता है।

(9) मनःस्नायुविकृति का एक प्रमुख प्रकार फोबिया (Phobia) भी है। इसमें व्यक्ति को अकारण ही किसी उत्तेजना से भय लगता है। यह भय आग या रोग या खुली जगह या बन्द गली या भीड़ या पशु किसी भी चीज से संबन्धित हो सकता है। इस तरह का कोई लक्षण मनोविकृति में नहीं पाया जाता है। पारानोइया या सिजोफ्रेनिया का रोगी यदि संदेह करता भी है तो उसका एक आधार होता है। यह आधार भले ही गलत हो।

(P.T.O.)

(5) दोनों प्रकार के मानसिक बीमारियों का अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान की विषय-वस्तु के अन्तर्गत किया जाता है।

(3) दोनों प्रकार की मानसिक बीमारियाँ हमारी दमित इच्छाओं की पूर्ति करती है।

(4) दोनों प्रकार की मानसिक बीमारियों की उत्पति का आधार शिला मानसिक संघर्ष होता है।

(5) दोनों प्रकार के मानसिक बीमारी हमें खतरनाक या तनावमुक्त परिस्थिति में रक्षा करती है।

(6) दोनों प्रकार के मानसिक बीमारी का अध्ययन करने पर पाते हैं कि इनका उपचार संभव है।

इस प्रकार देखते हैं कि इन दोनों प्रकार की मानसिक बीमारियों में बहुत कुछ समानताएँ हैं लेकिन ये दोनों एक नहीं हैं इनमें निम्नलिखित अन्तर पाये जाते हैं-

(1) मनःस्नायुविकृति अपने आप में कोई एक खास और विशिष्ट बीमारी नहीं हैं। इसी प्रकार मनोविकृति कोई एक खास और विशिष्ट बीमारी नहीं है बल्कि कुछ खास कठिन मानसिक बीमारियों का एक समूह है।

(2) मनःस्नायुविकृति रोग से ग्रसित व्यक्तियों को समाज में पहचानना और उनको अलग करना एक कठिन कार्य है क्योंकि इनका व्यवहार सामान्य व्यक्ति के अनुरूप होता है। लेकिन मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति का व्यवहार सामान्य व्यक्ति से बहुत भिन्न होता है। इनका व्यवहार और व्यक्तित्व कुछ इस प्रकार का होता है कि इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

(3) मनःस्नायुविकृति से ग्रसित व्यक्ति अपना एवं अपने परिवार का पालन-पोषण अपने द्वारा कर सकने में समर्थ रहते हैं लेकिन मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति में यह समर्थता नहीं पाई जाती है। रोग की प्रबलता बढ़ जाने पर परिवार को कौन कहे ये अपनी देख-रेख और पालन पोषण कर सकने में असमर्थ रहते हैं।

(4) मनःस्नायुविकृति से ग्रसित व्यक्ति अपने एवं परिवार के लिए घातक नहीं होते हैं। लेकिन मनोविकृति का रोगी अपने एवं परिवार दोनों के लिए घातक होते हैं। समय पड़ने पर आत्महत्या कर सकते हैं और परिवार का खून भी कर सकते हैं।

(10) मनःस्नायुविकृति तथा मनोविकृति का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि मनोविकृति के रोगी का व्यवहार बहुत ही विचित्र, बेढ़गा तथा ऊटपटांग हो जाता है लेकिन इस तरह का व्यवहार मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाया जाता है।

(11) इन दोनों प्रकार के रोगियों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाते हैं कि मनोविकृति के रोगी में सूझ की कमी पाई जाती है लेकिन मनःस्नायुविकृति के रोगी में सूझ की कमी नहीं पाई जाती है।

(12) मनोविकृति के रोगी में रोग की प्रबलता बढ़ जाने पर मानसिक ह्रास होने लगता है लेकिन इस तरह का लक्षण मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाया जाता है।

(13) मनोविकृति के रोगी में विभ्रम (Hallucination) का लक्षण पाया जाता है। यह दृष्टि से संबंधित, घ्राण से संबंधित या श्रवण से संबंधित किसी भी प्रकार का हो सकता है। सिजोफ्रेनिया के रोगी मरे हुए व्यक्ति के दर्शन करते हैं। कोई रोगी भगवान का दर्शन करते हैं। किसी रोगी को अचानक आवाज सुनाई पड़ती है। किसी रोगी को सुगम संगीत सुनाई पड़ती है लेकिन इस तरह के लक्षण मनःस्नायु विकृति के रोगी में नहीं पाया जाता है।

(14) सिजोफ्रेनिया के रोगी में व्यामोह (Dellusion) के लक्षण भी पाये जाते हैं। ऐसे तो साधारण व्यक्ति को भी कभी कभी मिथ्या विश्वास या व्यामोह उत्पन्न हो जाता है लेकिन साधारण व्यक्ति अपने तर्क वितर्क के आधार पर या एक दूसरे के समझाने पर इस प्रकार की मिथ्या विश्वास से मुक्ति पा लेते हैं लेकिन पारानोइया तथा सिजोफ्रेनिया के रोगी का व्यामोह बहुत ही क्रमबद्ध, संगठित एवं तर्क-वितर्क से परिपूर्ण होते हैं। ये व्यामोह किसी भी प्रकार के हो सकते हैं। ये महानता, अपराध, रोगात्मक, ईर्ष्या और संदेह किसी से भी संबंधित हो सकते हैं। इस तरह के लक्षण मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाया जाता है।

(15) मनोविकृति (Psychosis) से ग्रसित व्यक्ति हमेशा काल्पनिक जगत में विचरण करता है। मनःस्नायु विकृति (Neurosis) से ग्रसित व्यक्ति सामान्य व्यक्ति की भाँति कभी- कभी काल्पनिक जगत में विचरण करता है।

(16) मनोविकृति (Psychosis) से ग्रसित व्यक्तियों को अपनी बीमारी का ज्ञान नहीं रहता है, जबकि मनःस्नायुविकृति (Neurosis) से ग्रसित व्यक्तियों को अपनी बीमारी का ज्ञान रहता है।

(17) मनोविकृति के रोगी रोग से मुक्त होने के लिए मनोचिकित्सक को सहयोग नहीं देते हैं जबकि मनःस्नायुविकृति का रोगी सहयोग देता है।

(18) मनोविकृति का उपचार कठिन है जबकि मनःस्नायुविकृति का उपचार आसान है।

(19) मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति का उपचार Hypnotic suggestion के द्वारा संभव नहीं है जबकि मनःस्नायुविकृति के रोगी का उपचार इसके द्वारा संभव है।

(20) मनःस्नायुविकृति से ग्रसित व्यक्ति को अधिक से अधिक संख्या में रोग से मुक्त किया जा सकता है जबकि मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति कम संख्या में अच्छा किया जा सकता है।

(21) मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति को लेख लिखने के लिए कहा जाय तो वह लेख लिखने के लिए तैयार नहीं होता है। अगर लिखता भी है तो लेख के विषय शीघ्रता से बदलते रहता है। ऐसी बात मनःस्नायु-विकृति के रोगी में नहीं पायी जाती है। वह अपनी योग्यता के अनुरूप लेख लिखता है।

(22) मनोविकृति के रोगी में कई प्रकार के भाषा दोष पाये जाते हैं। पूछे जाने पर वह जवाब नहीं देता। हमेशा चुपी साधे रहता है। अगर बोलता है तो अजब भाषा का प्रयोग करता है। वाक्य अधूरे होते हैं, शब्द निरर्थक होते हैं। ये सब बातें मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाई जाती हैं।

(23) मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति में सामाजिकता का अभाव पाया जाता है। इसके कई रोगियों को अनेक दिनों तक एक साथ रख देने पर आपस में बात नहीं करते हैं। आदान-प्रदान की कोई क्रिया नहीं होती है। ऐसी बात मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पायी जाती है।

(24) मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति संवेग के प्रति उदासीन रहते हैं। संवेगात्मक परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया भी करते हैं तो वह सही रूप से नहीं करते हैं। दुख के समय वे हँसते हैं और हँसने के समय के समय वे रोते हैं। ऐसी बात मनःस्नायुविकृति के रोगी में नहीं पाई जाती है।

(25) मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति के व्यक्तित्व में स्वप्नचारिता के लक्षण नहीं पाये जाते हैं जब कि मनःस्नायुविकृति के अन्तर्गत Hysteria के रोगी में यह लक्षण पाया जाता है।

इस प्रकार देखते हैं कि Neurosis (मनःस्नायुविकृति) और Psychosis (मनोविकृति) में अन्तर पाया जाता है जो उपर्युक्त है।